दीदी की अद्भुत पालना और सम्भाल

✻ ब्रह्माकुमार डॉ. रामश्लोक, शान्तिवन

सन् 1969 में मैं ईश्वरीय ज्ञान के सम्पर्क में आया। सत्य की खोज के लिए मैंने सब धर्मों का अध्ययन किया था इसलिए सबकी मुख्य-मुख्य बातों को मैं जानता था। मेरे जीवन की शुरूआत सीधे मुरली सुनने से हुई। बाबा की मुरली के ज्ञान-बिन्दु इतने ज्ञानयुक्त, युक्तियुक्त तथा तर्कसंगत होते हैं कि मैं जो बात सोच के जाता उसी का उत्तर आ जाता। ज्ञान की ऐसी बातों से प्रभावित होकर मैंने प्रतिदिन मुरली सुनना प्रारम्भ कर दिया लेकिन मन को एकाग्र करने में बहुत मुश्किल होती थी। जब अन्न की शुद्धि का ज्ञान मिला और उसे अपनाया तो मन भी एकाग्र होने लगा। संदेशी दादी (मम्मा की मौसेरी बहन) हमारी टीचर थी। हम लौकिक रीति से अध्ययनरत थे। सेवाकेन्द्र के नज़दीक कमरा किराये पर लेकर रह रहे थे इसलिए सारा दिन सेन्टर पर आना-जाना होता रहता था। सेवाकेन्द्र का सारा कार्य-व्यवहार भी हम सम्भालते थे। पढ़ाई से जब छुट्टियाँ होती थीं तो माउंट आबू आ जाते थे।

परखने में माहिर दीदी

एक बार हम मुज़फ्फरपुर से माउंट आबू आ रहे थे। रिजर्वेशन उन दिनों होता नहीं था। ट्रेन में लगभग 40 घंटे बैठ करके हम आबू पहुँचे। जब पांडव भवन क्लास में गये तो दादी प्रकाशमणि मुरली सुना रही थी और दीदी वहीं कुर्सी पर बैठकर नोट्स लिख रही थी। स्टूडेन्ट लाइफ सीखना हो तो दीदी से सीखें। दीदी हर बात में बहुत एक्यूरेट थी। क्लास में ही एक भाई ने दीदी से कहा, पहरा देने के लिए एक भाई की ज़रूरत है। दीदी ने हाथ खड़े करवाए कि यह सेवा कौन करेगा। मैंने देखा, किसी ने हाथ नहीं उठाया, मैंने हाथ उठा लिया। हरेक के पास कई-कई ड्यूटीज़ होती थीं, मैं तो नया-नया था। पहरा रात को दस बजे से सुबह पांच बजे तक देना होता था। फिर धोबी घाट वाले भाई ने कहा, मुझे भी एक सेवाधारी की ज़रूरत है। दीदी ने फिर पूछा, धोबीघाट में कौन जायेगा? मैंने फिर हाथ उठा दिया। फिर लच्छू दादी ने कहा, मुझे अलमारी को पेन्ट कराना है, कौन करेगा? उसके लिए भी मैंने हाथ उठा दिया। रातभर पांडव भवन का पहरा दिया। फिर आठ बजे से दस बजे तक धोबीघाट में सेवा की, उसके बाद ग्यारह बजे अलमारी को पेन्ट करना शुरू किया। पेन्ट करते-करते मुझे इतनी ज़ोर की नींद आई कि मैं ब्रश हाथ में पकड़े खड़ा-खड़ा ही सो गया। दीदी ग्यारह बजे पोस्ट लिखती थी। उस कार्य को पूरा करने के बाद दीदी-दादी दोनों शान्तिस्तम्भ की तरफ आईं। दोनों ने देखा, मैं तो

सो रहा था। दादी ने पूछा, रामश्लोक क्या कर रहे हो? आवाज़ सुन करके मेरी नींद खुली और मैं चौंक गया। फिर मैंने बताया कि पिछले 56 घंटों से मैं लगातार सेवा में हूँ, अब आत्मा की बैटरी बिल्कुल ज़ीरो पर पहुँच गई है। सारी बात सुनकर दीदी ने मुझे तुरंत सेलेक्ट कर लिया कि यह बालक यज्ञ की बड़ी ईमानदारी, वफादारी से सेवा करेगा। इसके बाद मुझे छुट्टी दी गई। भोजन करके मैंने आराम किया और पाँच बजे फिर म्यूज़ियम में जाने की ड्यूटी लगाई गई।

प्रशासन की गहरी सूझ

दीदी-दादी दोनों प्रशासन के अलग-अलग भागों को संभालती थीं। दादी जी क्लास, मुरली आदि संभालती थी और दीदी भोजन आदि का विभाग देखती थी। आवास-निवास भी दीदी ही देखती थी। दीदी दिल्ली तरफ के सेवाकेन्द्रों को सम्भालती थी और दादी मुंबई तरफ के सेवाकेन्द्रों की देख-रेख करती थी। दीदी और दादी का आपस में इतना समायोजन था कि हम कहते थे, दो शरीरों में एक आत्मा है। एक जो बोलेंगी, दूसरी हाँ ही करेंगी। क्यों, क्या उनके बीच में आते ही नहीं थे। दादी ने जो बोला, दीदी ने हाँ जी किया। दीदी ने जो बोला, दादी ने हाँ जी किया। दीदी में प्रशासन संभालने की इतनी सूझ और शक्ति थी कि कोई उनके सामने सिर उठाके बात करे, संभव नहीं था। सिर नीचा करके ही हम दीदी के साथ बात करते थे।

ऊर्जावान स्टूडेन्ट लाइफ

दीदी जब किसी को बुलाने के लिए घंटी बजा देती थी तो हम लोग अपना चार्ट देखने लगते थे कि हम से क्या भूल हुई है। मन में सवाल आता था कि बुलाया क्यों है? दीदी बुलाकर डायरेक्शन देती थी। रात के नौ बजे की क्लास में भी दीदी हाथ में डायरी लेकर हाज़िर होती थी। रात की क्लास में दीदी ज्ञान का बैडमिंटन खेलती और खेलवाती थी। सुबह की सुनी हुई मुरली में से प्रश्न-उत्तर निकालती थी। दीदी सवाल पूछती थी और हम लोग उत्तर देते थे। वे ऐसे-ऐसे सवाल पूछती थी कि हम लोगों को फेल कर देती थी। दीदी की विशेषता थी कि वे सदा स्टूडेन्ट बनकर रही। इतनी उम्र में भी उनमें स्टूडेन्ट भाव प्रबल था। वे बहुत उमंग-उत्साह और ऊर्जा वाली थी। दीदी अधिकतर योग करवाती थी, दृष्टि देती थी और अनुभव करवाती थी।

एकॉनॉमी का भाव

दीदी में एकॉनॉमी का भाव कूट-कूट कर भरा था। उन दिनों निवार की चारपाइयाँ होती थीं। दीदी-दादी हमारे साथ बैठकर निवार का गोला बनाती थीं, फिर हम उस निवार से चारपाई बुनते थे। जब योग-भवन, ज्ञान-विज्ञान भवन बन रहे थे तो शाम को हम सब लोग तार आदि बांध करके सेन्ट्रिंग करते थे। नाश्ते के बाद छत डालते थे। सीमेंट की बोरियाँ उठाते थे। तगारियाँ उठाते थे। यज्ञ में इतने पैसे नहीं होते थे कि मज़दूरों को दिये जा सकें इसलिए सब काम दीदी-दादी की देख-रेख में हाथों से किये जाते थे। एकॉनॉमी के संबंध में एक हंसी की बात याद आ रही है। एक बार हमने सोचा, संदेशी दादी को एक पत्र लिखते हैं, पोस्ट कार्ड पांच पैसे में आता था। जब पोस्ट कार्ड मांगा तो पूछा गया, आपको क्या लिखना है। हमने कहा, याद-प्यार, राज़ी-खुशी लिखना है। दीदी ने कहा, एक चिटकी पर लिख कर दे दो, हम जो लिफाफा भेज रहे हैं उसी में डालकर भेज देंगे, पांच पैसे क्यों खर्च करें? मैंने वैसा ही किया, चिटकी लिखकर दे दी। दीदी की ऐसी पालना से हमारे भी रग-रग में एकॉनॉमी समा गई है।

दीदी द्वारा अनोखी सज़ा

मैं, वल्लभ भाई, राजू भाई, गोलक भाई सब इकट्ठे लाइट हाउस में रहते थे और छोटे-छोटे तो थे ही। गोलक भाई को एक दिन केले खाने का दिल हुआ। पचास पैसे के एक दर्जन केले मिलते थे। हमें कटिंग और हज़ामत के लिए भी 50 पैसे मिलते थे दो महीने बाद। जब दो मास कटिंग के

हो गए तब मैं ईशु दादी के पास गया और मुझे 50 पैसे मिल गए। रास्ते में गोलक भाई मिले, उन्होंने पूछा, कहाँ से आ रहे हो? मैंने कहा, ईशु दादी से 50 पैसे लेके आ रहा हूँ। उन्होंने कहा, दिखाओ। मैंने हाथ खोला, हथेली पर अठन्नी रखी थी, उन्होंने हाथ को नीचे से उछाल दिया। अठन्नी गिर गई। वह अठन्नी लेकर बाज़ार से एक दर्जन केले ले आया। मुझे कहा, कुछ दिन और हज़ामत नहीं करवाएगा तो क्या हो जायेगा? जब केले आ गये तो विचार चला कि इन्हें खायें कहाँ? हम लोगों ने कमरे में बैठकर छिपकर केले खाये। फिर प्रश्न आया कि छिलके कहाँ फेंकेंगे। छिलकों को हमने एक डिब्बे में फेंक दिया। सफाई करने वाली माता ने डिब्बे में छिलके देख लिए। एक भाई पहरे की ड्यूटी करता था उसने छिलके ले जाकर दीदी को दिखाये और कहा कि दीदी इन लोगों ने केले खाये हैं। अगले दिन दीदी के सामने हमारी पेशी हुई। हम सोच में पड़ गए कि हम लोगों ने क्या गलती की है। दीदी पालना भी देती थी तो संभाल भी करती थी। दीदी ने पूछा, तुम लोग केले लाये कहाँ से और केलों के लिए 50 पैसे लाये कहाँ से? हमने सारी बात सुना दी कि 50 पैसे हजामत वाले थे, उनसे केले खरीदे गये हैं। दीदी सुनती भी रही और हमारा मुख भी देखती रही। हम लोग डर के मारे कांप रहे थे लेकिन हमने चोरी तो की नहीं थी। जिन्होंने शिकायत की थी वो भी देख रहे थे कि देखें आज इनको क्या सज़ा होती है। दीदी का सज़ा देने का तरीका भी न्यारा और प्यारा था। दीदी ने उसी समय भूरी दादी को बुलाया। भूरी दादी आबू रोड से सब्जी खरीद कर ले जाती थी। दीदी ने कहा, भूरी दादी, इन बालकों का केले खाने का दिल होता है, 15 दिन में एक दर्जन केले लाकर इनको देना। हम लोग इतने खुश हुए और मन ही मन दीदी का खूब गुणगान किया। तब से दीदी की आज्ञा प्रमाण केले आते रहे और हमें मिलते रहे।

डेढ़ रुपये की घड़ी

दीदी की पालना की कमाल थी, किसी की तबीयत खराब हो जाती थी तो खुद देखने जाती थी। दीदी की लौकिक माताजी का नाम था क्वीन मदर। हम लोगों की बनियान फट जाती थी तो क्वीन मदर उसे सिलाई करके देती थी। कहती थी, इसे कुछ दिन और पहनो। एक बार क्वीन मदर ने मुझे एक घड़ी दी चुपके से। सन् 1936 की रशियन घड़ी थी, कीमत थी डेढ़ रुपये (अठारह रुपये प्रति दर्जन)। बहुत चमकदार और एकदम नई घड़ी थी। हममें से किसी भी भाई के पास घड़ी नहीं होती थी। क्वीन मदर ने घड़ी देकर कहा, इसे दिन में मत पहनना। मैंने पूछा, क्यों? तो कहा, दूसरे देखेंगे तो वे भी मांगेंगे। मैंने पूछा, कब पहननी है? क्वीन मदर ने कहा, रात को ग्यारह बजे पहनना और सुबह तीन बजे खोलकर रख देना। हमने कहा, दादी, इसका क्या फायदा, तो कहा, नहीं, तुम पहन के रात को सोना। वह बहुत अच्छी घड़ी थी, लम्बे समय तक हमारे पास रही, वैसी ही चमकदार रही, कोई घड़ीवाला उसे खोल नहीं पाता था। कभी खराब नहीं हुई। चाबी भरने वाली थी, एकदम ठीक चलती थी। दिन में उसे जेब में रखे रहते थे।

संगदोष से सावधानी

दीदी इतना ध्यान रखती थी कि म्यूज़ियम जाते समय आपके साथ कौन था, किसका संग किया? हम अकेले नक्की झील तक भी नहीं जा सकते थे, गहरी जांच-पड़ताल होती थी। दीदी कहती थी, कहाँ भी जाना हो, दो साथ जाओ। दीदी संगदोष से बचाने का बहुत ख्याल रखती थी, कहती थी, संग घुन की तरह से है। इतनी पालना दीदी देती थी। दीदी-दादी ने हम लोगों पर इतना ध्यान दिया, क्या वर्णन करें? हमारी एक-एक पल की खबर उनके पास होती थी। मुझे आवास-निवास की सेवा में भी दीदी ने ही रखा था। दीदी से हमने बहुत दुआयें पाईं। उनकी दुआओं और पालना से हम इतने आगे बढ़े।

दीदी का फ़ैसला

एक बार एक भाई के साथ मेरा थोड़ा विवाद हो गया। हम दोनों को दीदी ने बुलाया। दीदी को फ़ैसला करना था। सच्चाई निकलवाने का दीदी के पास बहुत अच्छा तरीका था। हम दोनों ने अपना-अपना पक्ष सुनाया। दीदी ने कहा, तुम दोनों ने भूल की है, दोनों बाबा के कमरे में एक-एक घंटा योग करो। शाम को दीदी ने फिर बुलाया, पूछा, बाबा के कमरे में गये थे? मैंने कहा, हाँ दीदी, डेढ़ घंटा योग किया। फिर पूछा, रियलाइज़ किया? महसूस कराने की दीदी के पास बहुत अच्छी तकनीक थी। मैंने कहा, हाँ दीदी, महसूस किया। फिर यही बातें दूसरे भाई से भी पूछी। उसने कहा, मैं बाबा के कमरे में गया ही नहीं। दीदी ने कहा, तुम सच्चे नहीं हो, तुम्हें भी तो रियलाइज़ करना चाहिए था ना, यूँ ही शिकायत करते रहते हो। दीदी-दादी के पास ऐसा तरीका था कि किसी को सज़ा की अनुभूति भी नहीं होती थी और उसे अपनी गलती महसूस भी हो जाती थी।

भोजन के समय निरीक्षण

दीदी की परख शक्ति और निर्णय शक्ति बहुत अद्भुत थी। दीदी मन से बहुत ही हलकी और सादी थी। बच्चे के साथ बच्चा, बड़ों के साथ बड़ी बन जाती थी। जब हम भोजन करते थे तो दीदी निरीक्षण करती थी कि कोई बातें करते तो खाना नहीं खा रहे। बाबा ने ही दीदी को कहा था, दीदी, भोजन के समय चक्कर लगाया करो। दीदी के सामने हम बहुत ज्यादा प्रश्न-उत्तर नहीं करते थे, चुप करके सुनते थे और हाँ जी करके चल देते थे। दीदी-दादी की पालना इतनी प्यारी थी कि घर कभी याद नहीं आया। ईश्वरीय कायदों में बहुत फायदे हैं। हम जितना सच्चे दिल से सेवा करेंगे, बाबा खुद ही आगे बढ़ायेंगे। हम किसी की टांग खींच करके, धक्का लगा करके आगे नहीं जा सकते। हम अपनी सेवा से ही आगे बढ़ते हैं। हम दिल से गीत गाते हैं, वो दिन कितने प्यारे थे, ये दिन भी कितने प्यारे हैं। ❖

संजय की कलम से..पृष्ठ 20 का शेष

अनेक वर्षों से कई केन्द्रों पर यह विचार किया जाता रहा है कि ईश्वरीय ज्ञान, योग और पवित्रता से सम्बन्धित एक प्रदर्शनी बनाई जाए। विशेषकर देहली में तो समय-समय पर प्रदर्शनी के बारे में विचार-विमर्श हुआ। आबू में भी प्रदर्शनी-जैसी एक चित्रशाला बनाने की योजना थी परन्तु मुम्बई केन्द्र के भाइयों व बहनों ने इस संकल्प को साकार रूप दिया है। परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान देकर नई सृष्टि का निर्माण कैसे कर रहे हैं और उस ज्ञान से भ्रष्टाचार तथा पापाचार दूर होकर मनुष्य श्रेष्ठाचारी कैसे बन रहे हैं, इस विषय को लेकर 'विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी' के लिये सारी सामग्री रची गई है।

पिछले दिनों मुम्बई में तथा देहली में इसी प्रदर्शनी से सम्बन्धित कार्यों में बहुत व्यस्त होने के कारण ही हम मासिक पत्रिका के कार्य की ओर यथेष्ट ध्यान न दे सके। अत: इसके प्रकाशन में देरी हो गई है। यह सोचकर कि प्रदर्शनी का कार्य भी जनता की ईश्वरीय सेवा का एक आवश्यक कार्य है, पाठकगण क्षमा करेंगे।

नाम में परिवर्तन

हमने सोचा था कि अब भी हम मासिक पत्रिका को 'त्रिमूर्ति' नाम ही देंगे परन्तु बाद में मालूम हुआ कि पिछले कुछ महीनों से एक और पत्रिका इसी नाम से प्रकाशित हो रही है। अत: इस पत्रिका को 'ज्ञानामृत' नाम से प्रकाशित करने का निर्णय किया गया है। यह बात सभी पाठकों को नोट कर लेनी चाहिए। ज्ञानामृत नाम भी बहुत ही अच्छा है। 'त्रिमूर्ति' नाम परमपिता परमात्मा शिव की मधुर स्मृति दिलाता था। अब 'ज्ञानामृत' नाम उन द्वारा प्राप्त हो रहे इस अमृत की ओर ध्यान आकर्षित किया करेगा। ❖